

ईद मुसलमानों का सब से बड़ा त्योहार है। यह रमजान के महीने के समाप्त होने पर मनाया जाता है। रमजान मुसलमानों के इस्लामी महीने का नाम है जो कि हिजरी संवत् के अनुसार होता है। मुसलमान लोग इस महीने को बहुत पवित्र समझते हैं। ईद को मनाने से पहले वे एक माह तक रोजे (व्रत) रखते हैं। ये रोजे रमजान के पूरे महीने में रखे जाते हैं। इस महीने के आरंभ से ही मुसलमान ईद की तैयारियां शुरू कर देते हैं। वे अपने घरों, दुकानों और कार्यालयों आदि की खूब साफ़-सफ़ाई करते हैं तथा रंग-रोगन आदि भी करवाते हैं। रमजान के बाद शव्वाल का महीना आता है। ईद इसी महीने की पहली तारीख को मनाई जाती है।

इस्लाम धर्म के अनुसार पैगम्बर मुहम्मद साहिब को रमजान के महीने में कुरान शरीफ प्रकट हुआ था। इसलिए इस महीने में ईद-उल-फितर का त्योहार मनाया जाता है। मुसलमान लोग ईद के पवित्र पर्व पर कुरान शरीफ की वर्षगांठ मनाते हैं। ईद के बारे में मुसलमान भाइयों का ऐसा विश्वास है कि रमजान के पूरे महीने में व्रत रखने से उन की आत्मा शुद्ध हो जाती है।

इसीलिए रमजान के महीने में मुसलमान लोग रोजे रखते हैं। रमजान का चांद देखकर ही वे रोजा शुरू करते हैं। प्रातः 'सादक' (दिन चढ़ने से पहले) होने से पहले ही वे स्नान आदि से निवृत्त होकर खाना खा लेते हैं। इस खाने को 'सेहरी' कहते हैं। 'सेहरी' के बाद वे नमाज़ पढ़ते हैं। तत्पश्चात् सारा दिन वे अन्न-जल ग्रहण नहीं करते। केवल खुदा (परमात्मा) की बंदगी (प्रार्थना) करते रहते हैं।

रोजे रखते समय मुसलमान बुरी वस्तुओं से परहेज़ रखते हैं। इन दिनों वे सिग्रेट, तम्बाकू आदि का बिल्कुल भी सेवन नहीं करते, न ही अपनी जुबान से कोई बेहुदा बात ही बोलते हैं वे किसी से भी झगड़ा या गाली-गलोच करना, झूठ बोलना, किसी की निन्दा-चुगली करना आदि बुरी बातों से दूर रहने की कोशिश करते हैं। रोजा रखने के बाद वे बाज़ार में बिना मतलब बैठना या घूमना ठीक नहीं समझते। वे किसी भी पकवान या मिठाई की दुकान से दूर रहते हैं ताकि वे इन की सुगन्ध से भी बच सकें। इस से उन्हें अपना रोजा खराब होने का भय रहता है। वे खेल-तमाशा नाटक-ड्रामा वगैरा देखना भी अनुचित समझते हैं। इस प्रकार इन रोजों के दौरान वे अपने मन को अत्यन्त शुद्ध, पवित्र और संयमी रखने का प्रयास करते हैं। इन दिनों वे नेक काम और नेक बातें करना, नमाज़ पढ़ना और खुदा की बंदगी करना अपना परम कर्तव्य समझते हैं। शाम को सूर्य के अस्त होने के बाद वे रोजा खोल देते हैं। रात को गांव या शहर की मस्जिद में सब लोग इकट्ठे होकर नमाज़ अदा करते हैं और कुरान का पाठ भी करते हैं। इस प्रकार वे पूरा रमजान का महीना बड़े कठोर व्रत का पालन करते हुए बिताते हैं।

रमजान के महीने की समाप्ति पर मुसलमान लोग सूरज के छिपने के समय नये चाँद के दर्शन करते हैं। इसे ही 'ईद का चाँद' कहते हैं। चाँद देखने के साथ उनके रोजे समाप्त हो जाते हैं।

ईद का चाँद मुसलमानों का बहुत प्यारा चाँद होता है। ईद का चाँद दिखाई देने के दूसरे दिन प्रातःकाल ही ईद मनाई जाती है। इस दिन लोग सुबह-सुबह स्नान आदि करके साफ़ कपड़े पहन लेते हैं। इस के बाद वे अच्छे-अच्छे खाने बनाते हैं। अधिकतर मीठे पकवान ही बनाये जाते हैं जिन में सैंवइयां, खीर, फिरनी, हलुवा आदि प्रमुख होते हैं। इन के अलावा, कई किस्म की नमकीन चीज़ें भी बनाई जाती हैं। सभी लोग अपनी-अपनी हिम्मत और स्थिति के अनुसार तरह-तरह के पकवान और खाने बनाते हैं। ये पकवान वे दोस्तों, रिश्तेदारों और पड़ोसियों में भी बांटते हैं। ईद का खाना खाने के बाद वे अच्छे-अच्छे वस्त्र पहनते हैं और खुशबू-इत्र का भी प्रयोग करते हैं। स्त्रियाँ अधिकतर मेंहदी का प्रयोग करती हैं। फिर सब लोग इकट्ठे होते हैं और एक दूसरे के गले मिलते हैं। वे आपस में एक दूसरे को ईद की मुबारकबाद देते हैं।

इस प्रकार ईद-उल-फितर का त्योहार बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। 'ईद' का मतलब मुसलमान लोग अपने लिए त्योहार मानते हैं और 'फितर' का मतलब वे गरीबों को दान देना मानते हैं। यह दान वे नमाज़ पढ़ने से पहले देते हैं। सभी परिवार अपने घर के सभी छोटे-बड़े व्यक्तियों की खैरो-खरीयत (कुशल-क्षेम) के लिए 'फित्रा' निकालते हैं और अपनी-अपनी हसीयत के मुताबिक दान देते हैं। अगर कोई 'फित्रा' नहीं निकालता, तो ऐसा माना जाता है कि उसके रोज़े खुदा को कबूल नहीं हुए।

रमज़ान के महीने को मुसलमान बड़े पुण्य का महीना मानते हैं। उनका यह दृढ़ विश्वास है कि इस महीने में अगर कोई एक नेकी करता है, तो उसे दस नेकियों का फल मिलता है। इसीलिए वे इस महीने में अधिक-से-अधिक पुण्य के काम करते हैं और खुदा की इबादत या बंदगी बड़े परहेज़ से करते हैं।

मुसलमान एक दूसरी ईद भी मनाते हैं जिसे 'ईद-उल-जुहा' भी कहा जाता है। यह ईद पैगम्बर इब्राहीम की याद में मनाई जाती है। पैगम्बर इब्राहीम साहिब पैगम्बर मुहम्मद साहिब से 2000 साल पहले हुए थे। कहते हैं कि इब्राहीम के पास खुदा की मेहरबानी से बेशुमार धन-दौलत थी, किन्तु उसके घर कोई सन्तान नहीं थी। उन्होंने खुदा की खूब बंदगी की। 90 वर्ष की आयु में उनके घर एक पुत्र ने जन्म लिया जिस का नाम अस्माईल रखा गया। जब अस्माईल नौ वर्ष का हुआ, तो खुदा ने इब्राहीम की परीक्षा लेनी चाही। उन्हें स्वप्न में फरिश्ते दिखाई देने लगे जो कहते कि खुदा के लिए कुर्बानी दो। इस पर इब्राहीम ने अनेक कुर्बानियाँ दीं और एक अवसर पर तो 101 ऊँट भी कुर्बान कर दिए। किन्तु फरिश्ते फिर भी उसे स्वप्न में आते रहे। वे बार-बार उसे यही कहते कि अपनी सब से प्यारी चीज़ की कुर्बानी खुदा को दो। तब इब्राहीम ने अपने प्यारे बेटे अस्माईल की कुर्बानी देने का फैसला किया। अस्माईल ने शैतान के बार-बार रोकने पर भी अपने बाप को अपनी कुर्बानी देने के लिए प्रेरित किया।

अन्त में, अस्माईल की कुर्बानी देने के लिए इब्राहीम उसे साथ ले कर काबा चले गए। वहाँ पर उन्होंने अपने बेटे को ज़मीन पर लिटा दिया और उस के हाथ-पाँव बांध दिए। अपनी आँखों पर भी उन्होंने पट्टी बाँध ली और बेटे की गर्दन पर छुरी चला दी। जब आँखें खोली, तो यह देख कर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि अस्माईल तो एक तरफ कुशलपूर्वक बैठा है और उस की

जगह एक मेंढा कत्ल हुआ पड़ा है। यह मेंढा दरअसल खुदा के हुक्म से ही कत्ल हुआ था। इस तरह इब्राहीम खुदा के द्वारा ली गई परीक्षा में खरा उतरा था। तभी तो मुसलमान इब्राहीम की याद में ईद-उल-जुहा मनाते हैं।

ईद-उल-जुहा के अवसर पर मुसलमान बकरे या मेढे की कुर्बानी देते हैं। इस दिन हाजी लोग काबा शरीफ भी जाते हैं और वहाँ पर कुर्बानी की इबादत करते हैं। वे वहाँ पर शैतान पर पत्थर भी फेंकते हैं, क्योंकि उसने ही अस्माईल को अपनी कुर्बानी न देने के लिए उकसाया था ताकि इब्राहीम अपनी परीक्षा में सही न उतर सके। पैगम्बर मुहम्मद साहिब ने कुरान शरीफ में अस्माईल की इस कुर्बानी का बार-बार वर्णन किया है।

ईद मुसलमानों का आत्मशुद्धि और देहशुद्धि का त्योहार है। इस पावन पर्व के अवसर पर सभी मुसलमान भाई, अपने मन को असत् विचारों और दुर्भावनाओं से मुक्त रखने का संकल्प लेते हैं। यह त्योहार हमें परस्पर सौहार्द बनाए रखने और आपसी मेल-जोल बढ़ाने का पाठ पढ़ाता है। यह हमें संयम, तप, त्याग आदि जीवन-मूल्यों को अपनाने का उपदेश भी देता है। आइये, हम सब इस त्योहार के पवित्र अवसर पर अपने सभी भेद-भाव भुला कर और ऊँच-नीच के भेद-भाव से ऊपर उठ कर अपने हृदय में एक-दूसरे के प्रति प्रेम-भाव जागृत करें। तभी हम इस त्योहार के महत्त्व को भली-भांति समझ सकते हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के अति लघु उत्तर दीजिए :

- (क) ईद मुसलमानों के किस महीने की पहली तारीख को मनाई जाती है ?
- (ख) मुहम्मद साहिब को किस महीने में कुरान शरीफ प्रकट हुआ था ?
- (ग) रोजे रखते समय मुसलमान किन-किन वस्तुओं से परहेज करते हैं ?
- (घ) ईद के दिन मुसलमान क्या-क्या पकवान बनाते हैं ?
- (ङ) ईद-उल-जुहा किस पैगम्बर की याद में मनाया जाता है ?

2. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

- (क) मुसलमान लोग रमजान के महीने को बहुत समझते हैं।
- (ख) रमजान के महीने में रोजे रखने से शुद्ध हो जाती है।
- (ग) पैगम्बर इब्राहीम के घर कोई नहीं थी।
- (घ) इब्राहीम ने अपने प्यारे बेटे की कुर्बानी देने का फैसला किया।
- (ङ) इब्राहीम अपने बेटे को साथ ले कर चले गए।

3. ईद-उल-फितर त्योहार कब, क्यों और कैसे मनाया जाता है ?

4. मुसलमानों के ईद-उल-जुहा नामक त्योहार का संक्षेप में वर्णन कीजिए।